STEPPING STONE SCHOOL (HIGH)

Cl-8

Subject: Hindi language Date-10-06-2020

Topic- comprehension Time Limit-30 mins

Worksheet No.:16

[Copy the questions and solve them on a sheet of paper date wise. Keep the worksheets ready in a file to be submitted on the opening day

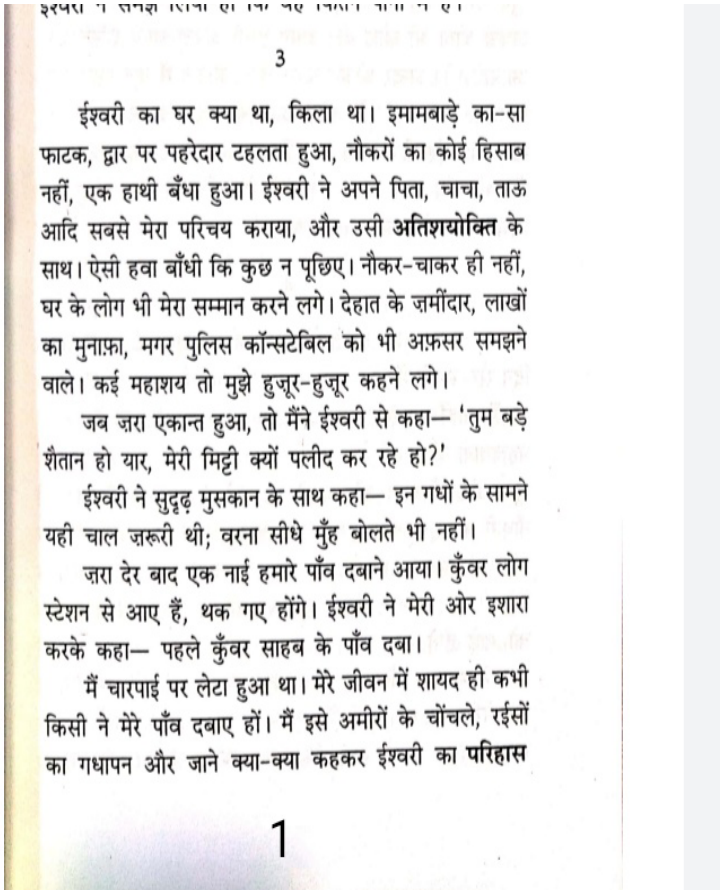

3

ईश्वरी का घर क्या था, किला था। इमामबाड़े का-सा फाटक, द्वार पर पहरेदार टहलता हुआ, नौकरों का कोई हिसाब नहीं, एक हाथी बँधा हुआ। ईश्वरी ने अपने पिता, चाचा, ताऊ आदि सबसे मेरा परिचय कराया, और उसी **अतिशयोक्ति** के साथ। ऐसी हवा बाँधी कि कुछ न पूछिए। नौकर-चाकर ही नहीं, घर के लोग भी मेरा सम्मान करने लगे। देहात के ज़मींदार, लाखों का मुनाफ़ा, मगर पुलिस कॉन्सटेबिल को भी अफ़सर समझने वाले। कई महाशय तो मुझे हुज़ूर-हुज़ूर कहने लगे।

जब ज़रा एकान्त हुआ, तो मैंने ईश्वरी से कहा— 'तुम बड़े शैतान हो यार, मेरी मिट्टी क्यों पलीद कर रहे हो?'

ईश्वरी ने सुदृढ़ मुसकान के साथ कहा— इन गधों के सामने यही चाल ज़रूरी थी; वरना सीधे मुँह बोलते भी नहीं।

ज़रा देर बाद एक नाई हमारे पाँव दबाने आया। कुँवर लोग स्टेशन से आए हैं, थक गए होंगे। ईश्वरी ने मेरी ओर इशारा करके कहा— पहले कुँवर साहब के पाँव दबा।

मैं चारपाई पर लेटा हुआ था। मेरे जीवन में शायद ही कभी किसी ने मेरे पाँव दबाए हों। मैं इसे अमीरों के चोंचले, रईसों का गधापन और जाने क्या-क्या कहकर ईश्वरी का **परिहास**

1

Edit with WPS Office

किया करता और आज मैं रईस बनने का स्वाँग भर रहा था।

इतने में दस बज गए। पुरानी सभ्यता के लोग थे। नई रोशनी अभी केवल पहाड़ की चोटी तक पहुँच पाई थी। अन्दर से भोजन का बुलावा आया। हम स्नान करने चले। मैं हमेशा अपनी धोती खुद छाँट लिया करता हूँ; मगर यहाँ मैंने ईश्वरी की ही भाँति अपनी धोती भी छोड़ दी। अपने हाथों अपनी धोती छाँटते शर्म आ रही थी। अन्दर भोजन करने चले। होटल में जूते पहने मेज़ पर डटते थे। यहाँ पाँव धोना आवश्यक था। कहार पानी लिए खड़ा था। ईश्वरी ने पाँव बढ़ा दिए। कहार ने उसके पाँव धोए। मैंने भी पाँव बढ़ा दिए। कहार ने मेरे पाँव भी धोए। मेरा वह विचार न जाने कहाँ चला गया था।

4

सोचा था, वहाँ देहात में एकाग्र होकर खूब पढ़ेंगे; पर सारा दिन सैर-सपाटे में कट जाता था। कहीं नदी में बजरे पर सै रहे हैं; कहीं मछलियों या चिड़ियों का शिकार खेल रहे हैं, पहलवानों की कुश्ती देख रहे हैं, कहीं शतरंज पर जमे हैं। ईश्वरी खूब अंडे मँगवाता और कमरे में 'स्टोव' पर ऑमलेट बनते। नौकरों का एक जत्था हमेशा घेरे रहता। अपने हाथ-पाँव हिलाने की कोई ज़रूरत नहीं। केवल ज़बान हिला देना काफ़ी है। नहाने बैठे तो आदमी नहलाने को हाज़िर, लेटे तो आदमी पंखा झलने को खड़े होते।

मैं महात्मा गाँधी का कुँवर चेला मशहूर था। भीतर से बाहर तक मेरी धाक थी। नाश्ते में ज़रा भी देर न होने पाए, कहीं कुँअर साहब नाराज़ न हो जाएँ, बिछावन ठीक समय पर लग जाए,

7/12

Edit with WPS Office

कुँवर साहब के सोने का समय आ गया। मैं ईश्वरी से भी ज़्यादा नाज़ुक दिमाग बन गया था, या बनने पर मजबूर किया गया था। ईश्वरी अपने हाथ से बिस्तर बिछा ले; लेकिन कुँवर मेहमान अपने हाथों से कैसे अपना बिछावन बिछा सकते हैं। उनकी महानता में बट्टा लग जाएगा।

एक दिन सचमुच ऐसा ही हुआ। ईश्वरी घर में था। शायद अपनी माता जी से कुछ बातचीत करने में देर हो गई। यहाँ दस बज गए। मेरी आँखें नींद से झपक रही थीं, मगर बिस्तर कैसे लगाऊँ? कुँवर जो ठहरा। कोई साढ़े ग्यारह बजे महरा आया। बड़ा मुँहलगा नौकर था। घर के धन्धों में मेरा बिस्तर लगाने की उसे सुधि ही न रही। अब याद आई, तो भागा हुआ आया। मैंने ऐसी डाँट बताई कि उसने भी याद किया होगा।

ईश्वरी मेरी डाँट सुनकर बाहर निकल आया और बोला— तुमने बहुत अच्छा किया। यह सब हरामख़ोर इसी व्यवहार के योग्य हैं।

इसी तरह ईश्वरी एक दिन एक जगह दावत में गया हुआ था। शाम हो गई; पर लैंप न जला। लैंप मेज़ पर रखा हुआ था। दियासलाई भी वहीं थी; लेकिन ईश्वरी ख़ुद कभी लैम्प नहीं जलाता था। फिर कुँवर साहब कैसे जलाएँ? मैं झुँझला रहा था। समाचार-पत्र आया रखा हुआ था। जी उधर लगा हुआ था; पर लैम्प नदारद। **दैवयोग** से उसी वक्त मुंशी रियासत अली आ निकले। मैं उन्हीं पर उबल पड़ा, ऐसी फटकार बताई कि बेचारा उल्लू हो गया— तुम लोगों को इतनी फ़िक्र भी नहीं कि लैम्प जलवा दो! मालूम नहीं, ऐसे कामचोर आदमियों की यहाँ कैसे गुज़र होती है। मेरे यहाँ घंटे भर निर्वाह न हो। रियासत अली

8/12

Edit with WPS Office

ने काँपते हुए हाथों से लैम्प जला दिया।

वहाँ एक ठाकुर अक्सर आया करता था। कुछ मनचला आदमी था, महात्मा गाँधी का परम भक्त। मुझे महात्मा जी का चेला समझकर मेरा बड़ा लिहाज करता था; पर मुझसे कुछ पूछते संकोच करता था। एक दिन मुझे अकेला देखकर आया और हाथ बाँधकर बोला— सरकार तो गाँधी बाबा के चेले हैं न? लोग कहते हैं कि यहाँ **सुराज** हो जाएगा तो ज़मींदार न रहेंगे।

मैंने शान जमाई— ज़मींदारों के रहने की ज़रूरत ही क्या है? ये लोग गरीबों का खून चूसने के सिवा और क्या करते हैं?

ठाकुर ने फिर पूछा— तो क्या सरकार, सब ज़मींदारों की ज़मीन छीन ली जाएगी?

मैंने कहा— बहुत से लोग खुशी से दे देंगे। जो लोग खुशी से न देंगे उनकी ज़मीन छीननी ही पड़ेगी। हम लोग तो तैयार बैठे हुए हैं। ज्यों ही स्वराज्य हुआ, अपने सारे इलाके असामियों के नाम कर देंगे।

मैं कुरसी पर पाँव लटकाए बैठा था। ठाकुर मेरे पाँव दबाने लगा। फिर बोला— आजकल ज़मींदार लोग बड़ा जु[illegible] हैं, सरकार। हमें भी हुज़ूर अपने इलाके में थोड़ी-सी [illegible] दें, तो चलकर वहीं आपकी सेवा में रहें।

मैंने कहा— अभी तो मेरा कोई **अख़्तियार** नहीं है, भाई, लेकिन ज्यों ही अख़्तियार मिला, मैं सबसे पहले तुम्हें बुलाऊँगा। तुम्हें मोटर-ड्राइवरी सिखाकर अपना ड्राइवर बना लूँगा।

सुना, उस दिन ठाकुर ने खूब भंग पी और अपनी स्त्री को खूब पीटा और गाँव के महाजन से लड़ने को तैयार हो गया।

छुट्टी इस तरह समाप्त हुई और हम फिर प्रयाग चले आए। गाँव के बहुत-से लोग हम लोगों को पहुँचाने आए। ठाकुर तो हमारे साथ स्टेशन तक आया। मैंने भी अपना पार्ट ख़ूब सफ़ाई से खेला और अपनी विनय और देवत्व की मुहर हरेक हृदय पर लगा दी। जी तो चाहता था, हरेक को अच्छा इनाम दूँ, लेकिन ऐसी **सामर्थ्य** कहाँ थी? वापसी टिकट था ही, केवल गाड़ी में बैठना था; पर गाड़ी आई तो ठसाठस भरी हुई। दुर्गा पूजा की छुट्टियाँ बिताकर सभी लोग लौट रहे थे। सेकेंड क्लास में तिल रखने की जगह नहीं। इंटर क्लास की हालत उससे भी बदतर। यह आख़िरी गाड़ी थी। किसी तरह रुक न सकते थे। बड़ी मुश्किल से तीसरे दर्जे में जगह मिली। हमारे ऐश्वर्य ने वहाँ अपना रंग जमा लिया; मगर मुझे उसमें बैठना बुरा लग रहा था। आए थे आराम से लेटे-लेटे, जा रहे थे सिकुड़े हुए। पहलू बदलने की भी जगह न थी।

कई आदमी पढ़े-लिखे भी थे। आपस में अंग्रेज़ी राज्य की तारीफ़ करते जा रहे थे। एक महाशय बोले— ऐसा न्याय तो किसी राज्य में नहीं देखा। छोटे-बड़े सब बराबर। राजा भी कि पर अन्याय करे, तो अदालत उसकी भी गर्दन दबा देती है।

दूसरे सज्जन ने समर्थन किया— अरे साहब, आप ख़ुद बादशाह पर दावा कर सकते हैं।

एक आदमी, जिसकी पीठ पर बड़ा-सा गट्ठर बँधा था, कलकत्ते जा रहा था। कहीं गठरी रखने की जगह न मिली थी। पीठ पर बाँधे हुए था। इससे बेचैन होकर बार-बार द्वार पर खड़ा हो जाता। मैं द्वार के पास ही बैठा हुआ था। उसका बार-बार

10/12

Edit with WPS Office

आकर मेरे मुँह को अपनी गठरी से रगड़ना मुझे बहुत बुरा लग रहा था। एक तो हवा यों ही कम थी, दूसरे उस गँवार का आकर मेरे मुँह पर खड़ा हो जाना, मानो मेरा गला दबाना था। मैं कुछ देर तक ज़ब्त किए बैठा रहा। एकाएक मुझे क्रोध आ गया। मैंने उसे पकड़कर ढकेल दिया और दो तमाचे ज़ोर-ज़ोर से लगाए।

उसने आँखें निकालकर कहा— क्यों मारते हो बाबूजी, हमने भी किराया दिया है।

मैंने उठकर दो-तीन तमाचे और जड़ दिए। गाड़ी में तूफ़ान आ गया। चारों ओर से मुझ पर बौछार पड़ने लगी।

'इतने नाज़ुक मिज़ाज हो, तो पहले दर्जे में क्यों नहीं बैठे?'

'कोई बड़ा आदमी होगा तो अपने घर का होगा। मुझे इस तरह मारते, तो दिखा देता।'

'क्या कसूर किया था बेचारे ने? गाड़ी में साँस लेने की जगह नहीं, खिड़की पर ज़रा साँस लेने को खड़ा हो गया तो उस पर इतना क्रोध। अमीर होकर क्या आदमी अपनी इन्सानियत बिलकुल खो देता है?'

'यह भी अंग्रेज़ी राज है, जिसके आप गुण गा रहे थे।'

एक ग्रामीण बोला— दफ़तरन माँ घुसन तो पावत नहीं, उस पर इत्ता मिजाज।

ईश्वरी ने अंग्रेज़ी में कहा— *What an idiot you are, Bir!*

और मेरा नशा कुछ-कुछ उतरता हुआ मालूम हुआ।

Edit with WPS Office

प्र.1) ईश्वरी का घर कैसा था? ईश्वरी ने वक्ता का किनसे परिचय करवाया? (उ० → पृ० सं० → 1)

प्र-2) ईश्वरी से वक्ता ने क्या पूछा तथा ईश्वरी ने उसका क्या जबाब दिया? (Answer Pg No-1)

प्र-3) वक्ता चारपाई पर लेटे क्या सोच रहा था? (Pg-1)

प्र-4) रात को भोजन के पहले एवं बाद में क्या-क्या हुआ? (Pg-2)

प्र-5) वक्ता ने पढ़ने के अलावा क्या-क्या किया? (Pg-2)

प्र-6) वक्ता ने महरा को क्यों डाँटा तथा ईश्वरी ने वक्ता से क्या कहा? (उ०- Pg-3)

प्र-7) वक्ता ने रियासत अली से क्या कहा? (उ०- Pg-3)

प्र-8) ठाकुर ने वक्ता से क्या पूछा? वक्ता ने क्या जबाब दिया? (Pg-4)

प्र-9) ठाकुर ने वक्ता से क्या माँगा? वक्ता ने उसको क्या जबाब दिया? (Pg-4)

प्र-10) लौटते समय वक्ता की क्या दशा हुई और क्यों? (Pg-5)

प्र-11) वक्ता ने ट्रेन में क्रोधित होकर किसे और क्यों ढकेल दिया? (Pg-6)

प्र-12) अंत में ईश्वरी ने वक्ता से क्या कहा? (Pg-6)

Edit with WPS Office